

पोस्ट-मैन

(Post Man)

Dr. Waseem Siddiqi
डा० वसीम सिद्दीकी
10/8Th Road North
Ahmadi.61008
Kuwait

मैं जब बचपन में छोटी क्लासों में था तो अंग्रेजी के अक्सर मजामीन याद करने पड़ते थे। जिनमें पोस्ट मैन पर मजमून काफी अहम होता था और अक्सर इम्तिहान में पूछा जाता था। उस वक्त यह सोचता था कि यह पोस्टमैन जरूर कोई काबिले दीद शख्सियत है जब ही तो उसके ऊपर मजमून लिखने को आता है। और उस वक्त दिल में यह अजीब ख्वाहिश पैदा हो गयी कि मैं बड़ा होकर पोस्टमैन बनूँगा और जनाब किस्मत में जो लिखा होता है मैं आँठवीं क्लास से ज्यादा पास ही नहीं कर पाया और फिर सिफारिश से पोस्टमैन हो गया।

पोस्टमैन को डाक तकसीम करने के सिलसिले में तजुर्बा और दुशवारियों का सामना करना पड़ता है। उसके बारे में आप लोगो ने काफी सुन रखा होगा मिसाल के तौर पर पोस्टमैन और कुत्ते से साथ जो अजली बैर है उसके बारे में कहीं छोटे साइज के कुत्ते के पिल्ले हों तो उस इलाके के पोस्ट मैन की वर्दी की पैन्ट नीचे मोहरी से फटी तो कहीं अगर बुल्डाग किस्म के बड़े कुत्ते के पिल्ले हों तो पोस्टमैन की वर्दी ऊपर से नुची ही रहती है। और उसके साथ साथ उसे अक्सर व बेशतर अपनी जान भी बचानी पड़ती है बहर हाल इस किस्म के वाक़ेआत तो आपने सुने ही होंगे लेकिन मेरे साथ जो वाक़ेआत और तजुर्बात पेश आये वह ज़रा दूसरी नवय्यत के हैं।

मैं पिछले दस सालों से डाक की तकसीम का फर्ज अन्जाम दे रहा हूँ मेरा ताल्लुक ज्यादा तर कॉलेज और यूनिवर्सिटी के हॉस्टल के बाद मोहल्ले दफ्तर या दुकानों से रहा है उन जगहों पर मैंने सादी डाक से लेकर रजिस्ट्री मनी आर्डर सभी तकसीम किये मेरी जो सबसे पहले ड्यूटी लगी उसमें यूनिवर्सिटी के तालिब इल्मों का एक हॉस्टल भी था उस हॉस्टल में तुलबा की डाक की तकसीम में भी एक अजीब लुत्फ था। अक्सर औकात लड़कों के कमरे बन्द ही रहा करते थे क्योंकि तुलबा उस वक्त अपनी क्लासों में जा चुके होते थे लेकिन बास औकात लड़कों से मुडभेड़ भी हो जाया करती थी। एब बार हॉस्टल में डाक तकसीम कर रहा था 86 नम्बर कमरे में लिफाफा खिसकाया और लौटने लगे तो घड़से 87 नम्बर का दरवाज़ा खुला उसमें रहने वाला तालिब इल्म कहने लगा पोस्टमैन आखिर तुम्हारी मुझसे क्या दुश्मनी है तुम हमेशा 86 नम्बर तक खत डालते हो और मेरे कमरे में आने से पहले लौट जाते हो आखिर मेरे नाम भी कभी कोई खत ले आया करो मैंने कहा मैं क्या करूँ साहब आपको कभी कोई खत लिखे तभी तो मैं लाऊँ वह बेचारा एक दम दिल गिरफ्त सा हो गया जबान पर सक्ता तारी हो गया और आँखें पथरा सी गयीं और भर्राई हुई आवाज़ में बोला पोस्टमैन तुम ठीक कहते हो मुझे कौन खत लिखेगा मेरा भला दुनियाँ में कौन है और उसकी आवाज़ एक दम सिसकियों में तबदील हो गयी मैं क्या बताऊँ उस वक्त मुझे अपने ऊपर गुस्सा आया कि ख्वाह मख़वाह मेरी वजह से उसकी दिल आजारी हुई बेचारे का दिल टूट गया उसके बाद जब भी मैं उस हॉस्टल में डाक बाँटने जाता था मेरी शदीद ख्वाहिश होती थी कि काश उसका भी कोई खत हो एक दिन उसी हॉस्टल के दूसरे लड़के से मैंने कहा 87 नम्बर के कमरे वाले साहब को देखकर बड़ा अफ़सोस होता है बेचारे का कोई नहीं है। जब ही तो उसका कोई खत नहीं आता है तो वह कहने लगा अरे वह 87 नम्बर वाला मगरूर वह तो बड़ा ड्रामेबाज़ है बल्कि ड्रामे क्लब का मिम्बर भी है उसके बड़े

भाई का घर इसी शहर में है उसके सारे खत उन्हीं पते पर आते हैं। यह सुनकर बड़ा गुस्सा आया और बेसाख्ता ज़बान पर आया काश उसका कोई न होता।

एक साहब जादे और थे जब भी उनके कमरे में डाक डालने जाता था वह हमेशा कमरे में मिल जाते थे। पता नहीं वह क्लास किस वक्त जाते थे और वह कमरे में कैसे मिलते थे ज़्यादा तर तो आइने के सामने कंधा करते हुये या टाई की गिरह दुरुस्त करते हुये या फिर पैन्ट वगैरह की क्रीज़ दुरुस्त करते हुये वैसे आदमी खुश एख़लाक़ थे। दो चार बातें ज़रूर करते थे एक दिन उनके कमरे में मैंने खत फेंका और जाने लगा कहने लगे अरे यार पोस्ट मैं साहब कहाँ चल दिये सब ठीक-ठाक

मैंने कहा हाँ अल्लाह का फ़ज़ल है लेकिन दोपहर में दाढ़ी क्यों बना रहे हैं क्या सुबह नहीं बनाते तो कहने लगे नहीं सुबह तो बनायी थी लेकिन इस वक्त भी बना रहे हैं तो आप रोज़ाना दिन में दो तीन बार दाढ़ी बनाते हैं। मैंने पूछा कहने लगे नहीं आज ही बना रहे हैं फिर एक आँख दबा कर बोले आज ज़रा उससे मिलने जाना है। मैंने कहा किसी से भी मिलने जाईये लेकिन इतनी दाढ़ी बनाने की क्या ज़रूरत है बोले अमाँ यार तुम नहीं समझोगे।

उन्हीं जैसे एक लड़के का वाकेआ सुनिये एक बार कहने लगे भाई पोस्टमैन तुम जब देखो वालिद साहब का ही खत लाते हो अरे कभी कोई कायदे का भी खत लाओ मैंने कहा जनाब कायदे के खत का क्या मतलब हुआ कहने लगे अरे वही ज़रा कोई खुशबूदार लिफ़ाफ़ा हो अब ज़रा देखिये यह ज़माना आ गया है वालिदैन के खत की कोई वक़त नहीं उन्हें खुशबूदार लिफ़ाफ़ा चाहिये।

इस पर एक और वाकेआ याद आ गया एक साहब के पास अक्सर खुशबूदार लिफ़ाफ़े आते रहते थे लगता था उनकी कोई गर्ल फ़्रेंड ज़रूर किसी इत्र फ़रोश की दुख़तर होगी। क्योंकि एक बार उनका लिफ़ाफ़ा तो इतना खुशबू से महक रहा था कि उस बंडल में जितने खुतूत थे सब ही महक गये थे। उस बंडल का एक दूसरा खत जो किसी वार्डन के नाम था मैं देने गया वह अपने कमरे के बाहर ही बरआम्दे में बैठे थे मैंने खत उनके हवाले किया कहने लगे अरे भाई लिफ़ाफ़ा बहुत महक रहा है। फिर लगे ही-ही करने कि इस उम्र में भी उनके पास ऐसा खत आ गया ही-ही जब बड़ी देर तक ही-ही करते रहे तो मैंने कहा जनाब उसे खोलकर देखिये तो सही तो जैसे एक दम उन्होंने अपने ऊपर काबू पाया ही-ही-ही में ब्रेक लगाया। और कुछ उन्हें अपने वार्डन होने का भी एहसास हुआ वह लिफ़ाफ़ा गौर से देखने लगे कुछ बड़बड़ाए यह तो यूनिर्वसिटी का ही लगता है। फिर खोलकर पढ़ने लगे और बड़ी ज़ोर से बोले लाहौल वलाकुव्वत यह तो रिटायरमेन्ट का नोटिस है अगले महीने मुझे रिटायर्ड होना है मैंने दिल ही दिल में सोचा कि जनाब की रिटायर्डमेन्ट के वक्त यह हालत है तो जब अपॉइन्टमेन्ट हुआ होगा तो क्या हाल होगा।

ख़ैर अब मनी आर्डर बाँटने के भी वाकेआत सुनिये।

पोस्टमैन साहब हमारा कोई मनी आर्डर है इस तरह का जुमला तो तक़रीबन मैं रोज़ ही किसी न किसी लड़के से सुनता था। अक्सर तो मैंने देखा कि एक तालिब इल्म दूसरे तालिब इल्म के मनीआर्डर के बारे में दरयाफ़्त कर रहा था। एक बार मैंने एक तालिब इल्म से पूछ ही लिया कि आप बार-बार नदीम साहब के मनीआर्डर के बारे में क्यों पूछ रहे हैं उनके मनीआर्डर से आप का क्या लेना देना तो वह बिगड़ कर बोले महीनों से उधार वापस नहीं कर रहा है। अब की जैसे ही उसका मनीआर्डर आयेगा उसके कमरे में जा धमकूंगा हद तो यह है कि हॉस्टल के बाहर के दुकानदार लड़कों के मनीआर्डर के बारे में दरयाफ़्त करते रहते थे। एक बार एक होटल वाला दरयाफ़्त करने लगा कि भाई ज़रा बताइये 71 नम्बर के असलम साहब का मनीआर्डर आया कि नहीं दो महीने से उन्होंने खाने के पैसे नहीं दिये फिर पान सिग्रेट वाला 88 नम्बर के अनवर साहब के बारे में पूछ रहा था।

अब ज़रा मोहल्ले में ख़त वग़ैरह बाँटने के वाक़ेआत सुनिये आज कल के पोस्टमैन तो ख़त या तो बाहर लेटर बॉक्स में डाल कर या घरों में फेंक कर चले जाते हैं पहले कुन्डी खटखटा कर ख़त देने का रिवाज था। एक घर में कुन्डी खटखटाई एक साहब निकले उन्हें ख़त दिया उन्होंने पते की तरफ़ देखा बड़ा बुरा सा मुँह बनाया और घूर कर मुझे देखा जैसे मुझसे कोई ग़लती सर ज़द हो गयी हो। फिर वहीं से चिल्लाकर कहने लगे बेगम तुम्हारी अम्मा का ख़त आया है। कहीं आने की इत्तिला तो नहीं दी है उनकी बेगम की भी अन्दर से कुछ झॉय-झॉय की आवाज़ आना शुरू हुई। लेकिन इससे पहले कि महाभारत शुरू होती मैं वहाँ से चल दिया।

एक दूसरे घर में ख़त देना था कुन्डी खटखटाई तो बड़ी तेज़ी से एक साहिबा नमुदार हुई। और कहने लगीं पोस्टमैन साहब आज तो मैं बड़ी देर से आपका इन्तिज़ार कर रही थी। मैं जानती थी आज आप ज़रूर आयेंगे मैं अपनी इस आवभगत पर मारे खुशी के बदहवास हो ही रहा था कि आज मैं शायद जच रहा हूँ। मैं दिल में यही सोच ही रहा था कि आवाज़ आयी कि मुझे यकीन था कि आज उनका ख़त ज़रूर आयेगा। अब क्या था मारे गुस्से के मैंने ख़त उनके हाथ में दिया और उन साहिबा को दिल ही दिल में दो चार सुनायी।

भला बताइये कैसा कैसा धोका हो जाता है मोहल्ले में ख़त बाँटने के सिलसिले में कभी कभी मुझे किसी न किसी के घर कुछ हिदायतें भी मिलती थीं। एक बार एक घर के एक साहब ज़ादे बोले पोस्टमैन घर के खुतूत में जब भी कोई पीले रंग का लिफ़ाफ़ा हो तो तुम घर में मत डालना बल्कि मेरे हाथ में देना। एक बार बेख्याली में पीले रंग का लिफ़ाफ़ा उन के हाथ में देने के बजाये उनके घर में डाल दिया बाद में पता चला कि वह पीला लिफ़ाफ़ा उनके वालिद साहब के हाथ में पड़ गया था। और वालिद साहब ने उन साहब ज़ादे को मारते मारते नीला कर दिया था। बहर हाल उसके बाद से कोई पीले रंग का लिफ़ाफ़ा नहीं आया और मुझे भी इस उलझन से निजात मिल गयी।

मोहल्लों में मनी आर्डर देते वक़्त मुझे अक्सर काफ़ी पेशानियों का सामना करना पड़ता। एक बार एक ख़ान साहब का मनीआर्डर था घर में आवाज़ लगायी एक साहब ज़ादे बाहर तशरीफ़ लाये मैंने कहा ख़ान साहब को बुलाइये मनी आर्डर है। साहब ज़ादे बोले कितने रूपये का है मैंने कहा उन्हें बुलाइये तो सब पता चल जायेगा कहने लगे मुझे रूपये दे दीजिये मैं दस्तख़त करूँगा मैंने कहा जिसके नाम मनीआर्डर होता है उसी को दिया जाता है। ख़ान साहब को बुला दीजिये वहीं लेंगे साहब ज़ादे अन्दर गये फिर थोड़ी देर में बाहर आये और कहने लगे अब्बा कह रहे हैं मनीआर्डर फ़ार्म अन्दर ले आओ वहीं दस्तख़त कर देंगे। बाहर नहीं आ सकते बहर हला अभी यह बहेस मुबाहेसा चल ही रहा था कि देखा ख़ान साहब बाहर से चले आ रहे हैं। मैंने कहा आप का मनीआर्डर है लेकिन आप बाहर से चले आ रहे हैं और यह साहब ज़ादे कह रहे थे कि आप अन्दर हैं कहने लगे ख़बरदार कभी इसको मनीआर्डर मत दीजियेगा और न ही इसकी अम्मा को दीजियेगा। फिर वह लड़के की तरफ़ मुतावज्जे हुये आस्तीन चढ़ाकर उसकी तरफ़ बढ़ ही रहे थे कि मैंने जल्दी से कहा जनाब पहले आप इसे वसूल कर लें। इससे तो बाद में निपटयेगा बहरहाल उनके दस्तख़त करवायें पैसे दिये और रवाना हो लिया।

मनी आर्डर कभी किसी ख़ातून के नाम होता है तो बड़ी परेशानी होती है एक घर में हमीदुननिसा के नाम से हर महीने मनीआर्डर आता था। तो कभी कोई दुबली सी ख़ातून मनीआर्डर वसूल कर रही थी कभी कोई बूढ़ी सी ख़ातून या कभी कोई नव उम्र सी ख़ातून और सब ही दस्तख़त हमीदुननिसा के करती थीं। एक बार हिम्मत करके पूछ ही लिया कि उससे पहले जो ख़ातून हमीदुननिसा आयी थी वह कुछ दुबली थीं आप ज़रा कुछ म-म-मोट उन्होंने जो घूर कर देखा तो मैं मोटी मुकम्मल न कर सका फिर सोचा हो सकता है एक महीने में मोटी हो गयी हो बहरहाल अब तक यह मोअम्मा ही रहा कि उनमें हमीदुननिसा कौन थीं।

कभी कभी कुछ खुतूत में अजीब व ग़रीब पते देखने को मिल जाते हैं। और उन पतों पर ख़त पहुँचाना एक जोए शेर लाने से कम नहीं होता।

एक बार एक पोस्टकार्ड पहुँचाना था ज़रा उस पर जो पता लिखा है उस पर गौर फरमाइयेगा। लल्लू मिस्त्री घोड़ी चाल, तीसरी गली की नुक्कड़ पर लकड़ी की टाल के सामने वाली दुकान को मिले खैर साहब मोहल्ला घोड़ी चाल पहुँचे तो वहाँ गलियाँ ही गलियाँ तीसरी गली ढूँडना बड़ा मुश्किल काम बहरहाल लल्लू राम की तलाश में घंटों उन गलियों के चक्कर लगाते रहे। इतने चक्कर तो शायद ही कभी किसी आशिक ने कभी किसी गली के न लगाये हों। एक जगह एक लकड़ी की टाल के सामने चार पाँच दुकानें नज़र आ ही गयीं। एक दुकान पर पहुँचा दुकान देख कर समझ ही नहीं पाया कि यह किस चीज़ की दुकान है वह परचून की भी दुकान लगती थी, कबाड़ी की भी और साइकिल की भी दुकान पर जो आदमी बैठा था उससे पूछा लल्लू राम साहब को जानते हैं तो दो तीन बार तो उस ने लल्लू राम साहब को दोहराया और साहब को बड़े जोर से खींचा। मैंने फिर उससे पूछा इन साहब को जानते हो तो जल्दी बताओ तो वह कुछ सोचकर बोला लल्लू मिस्त्री तो नहीं मैंने कहा भाई वही बिल्कुल वही तो वह कुछ गुस्से में बोला तो मिस्त्री कहो न तुम तो साहब साहब कहे जा रहे हो मैंने कहा बाबा मिस्त्री ही सही तुम बताओ तो वह कहाँ मिलेगा। उसकी कौन सी दुकान है मुझे उसका ख़त देना है तो भई कहने लगा अरे हम ही तो लल्लू मिस्त्री हैं। लाओ चिट्ठी लाओ बहरहाल इस तरह के वाक़ेआत एक दो नहीं पचासों हैं जो आइन्दा फिर कभी सुनाऊँगा।

.....☆.....